PHILOSOPHY

Hons., Paper-VI (Part-III)

Anarchism
(अराजकतावाद)

Dr. S. K. Singh
Mob.-9431449925

→ साधारण बोलचाल की भाषा में अराजकता का आशय लूटमार, हत्या, अव्यवस्था आदि से लिया जाता है परन्तु शास्त्रीय दृष्टिकोण से अराजकतावाद की अवधारणा इससे पूर्णतः भिन्न है। वस्तुतः यह प्रत्येक प्रकार के प्राधिकार (Authority) या शासन का विरोध करता है। ~~इसका आशय~~

• इसका आशय व्यवस्था के अभाव से न होकर प्राधिकार या दबाव के अभाव से है।

→ अराजकतावाद अंग्रेजी के 'Anarchism' शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है तथा 'Anarchism' शब्द ग्रीक शब्द 'Anarchia' से बना है जिसका आशय है - शासन का अभाव। अतः अराजकतावाद एक ऐसी विचारधारा है जो राज्य तथा प्रत्येक प्रकार के अधिकार शक्ति का न केवल विरोध करता है बल्कि उसका पूर्ण उन्मूलन करना चाहता है। यह शासन-सत्ता के सभी प्रकारों को अनावश्यक एवं अवांछनीय मानता है।

→ सामाजिक-राजनीतिक दर्शन में एक विचारधारा के रूप में अराजकतावाद प्रत्येक किस्म के प्राधिकार (Authority) को अस्वीकार करता है और यह मानता है कि मनुष्य की सामाजिक प्राकृतिक प्रवृत्तियों की सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति तभी हो सकती है जब समाज का संगठन ऐच्छिक सहयोग एवं स्वतंत्रता के आधार पर होगा।

→ व्यक्तिवाद जहाँ राज्य को आवश्यक बुराई मानता है वहीं अराजकतावाद राज्य को अनावश्यक बुराई मानता है अर्थात् अराजकतावाद के अनुसार राज्य अनावश्यक भी है और बुराई भी है। इनके दृष्टिकोण से राज्य एक दमनकारी यंत्र है जो व्यक्ति के स्वाभाविक स्वतंत्र विकास में बाधक है।

Scanned with CamScanner

→ अराजकतावाद के एक प्रमुख चिन्तक विचारक 'प्रिंस क्रोपॉटकिन' के अनुसार - 'अराजकतावाद जीवन का वह प्रमुख सिद्धान्त है जिसमें शासन विहीन समाज को आदर्श माना जाता है। इस रूप में यह एक ऐसा दार्शनिक सिद्धान्त है जिसमें -

(i) शासन विहीन समाज की कल्पना है जहाँ व्यक्ति पूर्ण रूपेण स्वतंत्र हो और जीवन तथा आचरण के नियम उस पर बाह्य से आरोपित नहीं किये गये हों।

(ii) समाज में सहयोग एवं परस्पर सामंजस्य के द्वारा नियम बनेंगे, जो स्वयं संचालित होंगे। उसपर किसी बाह्य सत्ता का नियंत्रण न हो।

→ इस प्रकार अराजकतावाद राज्य एवं राज्य से संबंधित उन सभी संस्थाओं का विरोध करता है जो व्यक्ति के जीवन पर नियंत्रण रखने का प्रयास करते हैं।

→ अराजकतावाद का लक्ष्य या उद्देश्य उन सभी संस्थाओं से मुक्ति प्राप्त करना है जो कि व्यक्ति की स्वतंत्रता के विरोधी या बाधक है। इस संदर्भ में प्रधानतः तीन प्रकार के सत्तास्रोतों से मुक्ति की बात उनके सामने आती है -

(i) मनुष्य के उत्पादक के रूप में पूँजीवादी दासता से मुक्ति।

(ii) मनुष्य को नागरिक के रूप में राज्य की दासता से मुक्ति।

(iii) आध्यात्मिक तत्वों पर आधारित धार्मिक सत्ता के प्राधिकार से मुक्ति।

इस प्रकार अराजकतावाद का उद्देश्य व्यक्ति की स्वतंत्रता में बाधक विभिन्न संस्थाओं को समाप्त कर उनके हस्तक्षेप व शोषण से व्यक्ति को मुक्त कर उसके स्वतंत्र नैतिक विकास का रास्ता प्रशस्त करना है।

→ अराजकतावाद के अन्तर्गत आदर्श समाज की स्थापना हेतु दो प्रकार के साधन दिखाई देते हैं - क्रांतिकारी साधन और शांतिपूर्ण साधन।

इस रूप में अराजकतावाद के दो वर्ग हो जाते हैं -

(i) क्रांतिकारी अराजकतावाद : समर्थक - बाकुनिन, क्रोपॉटकिन इत्यादि।

(ii) विकासवादी या अहिंसक अराजकतावादी : समर्थक - टॉलस्टॉय, गांधी आदि।

Scanned with CamScanner